प्रकृते : सन्देशा :

डॉ. ओमप्रकाश पारीक
सह-आचार्य (संस्कृत), कॉलेज शिक्षा विभाग (राज.)

मेघः सूर्याद् हि
जलमादाय
कस्मात् हेतोः गर्जति।।
अर्थ-मेघ सूर्य से जल
लेकर फिर किस
कारण गरजता है ।।

साफल्यशोभां
सूर्यकरैराप्नोति
कमलमत्र ।।
अर्थ-सफलता की शोभा को
सूर्य की किरणों से प्राप्त करता है
यहाँ कमल।।

आकाशः पृथ्व्या सह
पाणिंगृह्यते
क्षितिजं धृत्वा।।
अर्थ-आकाश पृथ्वी के साथ
पाणिग्रहण करता है (हाथ थामता है)
क्षितिज को धारण करके।।

मेघो वर्षति
पृथिव्याः तापं दृष्ट्वा
आर्द्रहृदयः ।।
अर्थ-मेघ बरसता है
पृथ्वी के ताप (पीडा) को देखकर
पिघले हृदय से

शिवे संपृक्ता
प्रकृतिस्तु योगेन
आदियोगी हि।।
अर्थ-शिव में एकाकार है
योग से प्रकृति
वे आदि योगी हैं।।

आत्मविस्मृताः
सूर्येण निस्सार्यन्ते
नद्यः समुद्रात्
अर्थ-अपने को भूल चुकी
सूर्य के द्वारा निकाल ली जाती हैं
नदियाँ समुद्र से।।

चन्द्रशोभायां
स्वात्माभया तारकाः
स्मयन्ते मुदा।।
अर्थ-चंद्रमा की शोभा पर
अपनी स्वयं की कान्ति से तारे
प्रसन्न हो गर्वभरे मुस्कुराते हैं।।

चन्द्रो धावति
चन्द्रिकामनुनेतुं
करान् प्रसार्य।।
चंद्रमा दौड़ता है
चाँदनी को मनाने के लिये
हाथों (किरणों) को फैला कर।।

विचित्रैः मेघैः
जगन्नाट्यं मे अक्ष्णोः
प्रदर्श्यते।।
अर्थ-विचित्र मेघों द्वारा
संसारी नाटक मेरी आँखों में
प्रदर्शित किया जा रहा है।।

प्रकृतिःअद्य
कृष्णाश्रूणि मुञ्चति
विकासं दृष्ट्वा।।
अर्थ-प्रकृति आज
काले आँसू रो रही है
विकास को देख कर।।